International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(III), April - June, 2021, pp.162-166

वैश्वीकरण के परिदृश्य में कला, कलाकार और चुनौतियाँ

डॉ शकुन्तला महावर*

सार

जन्म से ही मानव अपने भावों की अभिव्यक्ति कला के माध्यम से करता आया है कलाओं में भावनाएं काम करती है, इनमें प्रवाह है, यह अनन्त है एवं मन को आनन्द देने वाली है। जिस प्रकार भवनाएं बह सकती है उसी प्रकार कलाएं लचीली होती है। कलाओं का उद्देश्य भावनाओं की सजीव सृष्टि करना है। भावभिव्यक्ति के इस दायरे में ही सृजनमय धारा कला विकास के साथ–साथ परिवर्तित होती रहती है। इस रूप में देखे तो कला मुख्यतः समय काल व अभिव्यक्ति में होते रहे बदलाव और तत्प्रचलित माध्यमों एवं मानव की प्रयोगवादी प्रवृत्तियों पर "केन्द्रित" रही है। कलाएं मानसिक उत्कर्ष के साथ–साथ सांस्कृतिक पहचान भी करवाती है। चाहे वे किसी भी क्षेत्र में हो जैसे चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्यकला, संगीतकला, काव्यकला आदिवासी या लोककलाएं सृजनात्मक होने के साथ–साथ यह नवीन शांति और सुकुन देने वाली होती है। यह भींतरी भावों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति है। परन्तु आज वर्तमान समय में वैश्वीकरण के कारण समस्त कलाओं एवं कलाकारो के सामने कई प्रकार की समस्याएं एवं चुनौतियाँ आ गई है। वैश्वीकरण एक व्यापक अवधारणा है। जिसमें सामन्यतः प्रजातंत्र, पूंजीवाद, उद्योगवाद, उदारवाद को सम्मलित किया जा सकता है। वैश्वीकरण से गतिशीलता आ रही है वैश्वीकरण मे व्यापकता व सार्वभौमिकता है जिनके फलस्वरूप पूंजीवादी उद्योग पनप रहा है। यह सही है कि वैश्वीकरण से भारतीय समाज में विशेष परिवर्तन हुये है। समाज भी इस परिवर्तन से प्रभावित हो रहा है। वैश्वीकरण से आधुनिकता की ओर अग्रसर होते हुए भी कलाकारों ने अपनी स्वयं की संस्कृति को बनाये रखने के साथ ही आज का कलाकार बाजारवाद की ओर उन्मुख होने लगा है क्योकि कला बाजार के अनुरूप ही कला कर्म और कला की विभिन्न प्रवृत्तियाँ अपनी दिशा निर्धारित कर रही है जो केवल रचनाकारों और समीक्षकों की संवेदहीनता का परिणाम है। वैश्वीकरण से जहाँ समाज भौतिकवाद की ओर प्रवृत्त हुआ है वहीं सामाजिक मूल्य भी तीवृता से परिवर्तित हो रहे है। समाज के अगुवा माने जाने वाले रचनाकार, चिंतक, लेखक, नाट्यकार, मौलिकता के रचना के माध्यम से एक सुखद और सुवासित वातावरण सृजित कर सकते है। इनके लिए स्वयं रचनाकारों तथा कला प्रेमियों का परिवर्तित होते सामाजिक, सांस्कृतिक व सौन्दर्य शास्त्रीय मुल्य, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा नवीन अन्वेष्णो से साक्षात्कार करते रहना होगा।

कुंजीशब्द: *वैश्वीकरण, कलाकार, प्रजातंत्र, पूंजीवाद, उद्योगवाद, उदारवाद।*

प्रस्तावना

किसी भी विषय की चुनौति की बात करने से पूर्व, यह आवश्यक हो जाता है, कि वह विषय क्या है और कैसा होना चाहिए।

आज स्पर्धा और प्रतिस्पर्धा का युग है इसमें वैचारिक, आर्थिक, वैज्ञानिक मानदण्ड या धरातल खोजने की ललकार है, प्रत्येक व्यक्ति किसी भी कार्य को करते समय सभी के अनुकूल, अर्थ लाभ और वैज्ञानिक आधार पर उचित ठहराना चाहता है। इसलिए यह सोचना आवश्यक हो जाता है कि क्या कला व कलाकार को भी इन्ही के आधार पर इन्ही को भरोसे छोड़ दिया जाना उचित है या नहीं। यह सोचने से पूर्व कलाओं के चरित्र एवं उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषताओं पर ध्यान देना आवश्यक है। ये विशेषताएं एक प्रकार से कालाओं को परिभाषित भी करती है।

* व्याख्याता – चित्रकला, एस.एस. जैन सुबोध गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, सांगानेर, राजस्थान।

कला मनुष्य की जीवन्त पर्यन्त चिर संगनी है। मनुष्य जन्म लेकर पृथ्वी रूपी माँ की गोद में आँखें खोली और आकाश रूपी पिता के नीचे रहना सीखा तभी कला का भी जन्म हुआ।

जन्म से मानव अपने भावों की अभिव्यक्ति कला के माध्यम से करता आया है। आदिम काल से ही मानव अपने विचारों को भावानुरूप रचता रहा है। कलाओं में भावनाएं काम करती है इनमें प्रवाह है, यह अनन्त एवं मन को आनन्द देने वाली हैं जिस प्रकार भावनाएं बह सकती है उसी प्रकार कलाएं लचीली होती है। कलाओं का उद्देश्य भावनाओं की सजीव सृष्टि करना है। भावभिव्यक्ति के इस दायरे में ही सृजनमय धारा कला विकास के साथ–साथ परिवर्तित होती रही है। इस रूप में देखें तो कला मुख्यतः समय–काल व अभिव्यक्ति में होते रहे बदलाव और तत्प्रचलित माध्यमों एवं मानव की प्रयोगवादी प्रवृत्तियों पर "केन्द्रित रही है"

कलाएं मानसिक उत्कर्ष के साथ–साथ सांस्कृतिक पहचान भी करवाती है। चाहें वे किसी भी क्षेत्र में हो जैसे– चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्यकला, संगीतकला, काव्यकला, आदिवासी अथवा लोककला। सभी कलाएं सृजनात्मक होने के साथ–साथ यह नवीन शक्ति और सकुन देने वाली होती है। यह भीतरीं भावों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति है कलाएं मनुष्य को संस्कारित करके मनुष्यत्व की ऊंचाईयों तक ले जाती है कला रचना और कला साधना के निर्बाध आनन्द की धारा कलाकार के मन और ह्रदय को निष्पात एवं आनन्द से परिपूर्ण बना देती है। वहीं आनन्द संवेदना उसके मन से छलक–छलक कर उसके व्यक्तित्व में परिलक्षित होती रही है।

विषय के सन्दर्भ में प्रसिद्ध कला विचारक डॉ आनन्द कुमार स्वामी के मत का उल्लेख किया जा सकता है जिन्होने कला की समग्र–चेतना को 'सत्यम', 'शिवम', सुन्दरम' के सूत्र में बांध कर विवेचित किया। सत्यदर्शन का विषय है, शिव धर्म का अनुसंधान है और सुन्दरम कला का मूल श्रोत है। इस रूप में मानव की सौन्दर्य परक प्रेरणा ही कला के उद्‌गम का आधार बनी। कला की निर्मिति में कलाकार को एक विशिष्ठ आनन्द की उपलब्धि होती है और आनन्ददाय ही कला का मुख्य उद्देश्य है। [1] कला के क्षेत्र में आत्मा की अनुभुति ही सत्य है जो सत्य है वह कला है और सुन्दर भी। कला आत्मा के अविर्भाव का नाम है। यह जीवन का अनुपम और अमूल्य अंग है। [2] परन्तु आज वर्तमान समय में वैश्वीकरण के कारण समस्त कलाओं व कलाकार के सामने कई प्रकार की चुनौतियाँ एवं समस्याएँ आ गई।

वैश्वीकरण एक व्यापक अवधारणा है। जिसमें सामान्यतः प्रजातंत्र, पूंजीवाद, उद्योगवाद, उदारवाद को सम्मलित किया जा सकता है। वैश्वीकरण से गतिशीलता आ रही है। इसमें व्यापकता व सार्वभौमिकता है। जिसके फलस्वरूप पूंजीवादी उद्योग पनप रहा है।

चूंकी कला में भाव, अनुभूति, विचार तथा भाषा आदि समयानुसार बदल रहे है। कला व कलाकारों में यह बदलाव नवीनता की दृष्टि से आवश्यक ही नहीं स्वाभाविक भी है जो सृजनात्मक पहलुओं को दर्शाता है।

आज का युग जहां कम्प्यूटरीकृत हो रहा है, वहां कलाकार को भी समय के साथ बदलना होगा, तभी देश के युवा कलाकार आगे बढ़ सकेंगे। जैसा कि मकबूल फिदा हुसैन ने कहा है कि ' कम्प्यूटर ने रचना और कृति के बीच की दूरी को दिन–महीनो से घटाकर सैकण्ड में बदल दिया है। मैं हमेशा यह चाहता था कि जितनी शीघ्रता से मैं सोचता हूँ, उतनी शीघ्रता से चित्र बना सकूँ। इस प्रकार कम्प्यूटर ने मेरी क्षमता व शक्ति के द्वार खोल दिये है। [3] वैश्वीकरण ने सम्पूर्ण विश्व को एक छोटे से गांव में परिवर्तित कर दिया है। विश्व के कलाकारों को एक मंच मिला है, जिसमें इंटरनेट की मुख्य भूमिका है नेट के माध्यम से हम किसी भी कलाकार की रचना को आसानी से लैपटॉप या किसी भी स्क्रीन पर देख सकते है जिससे कला व कलाकार को नया आयाम मिला है।

आज कलाओं में सृजन का दायरा बदला वहीं उसके प्रदर्शन के तौर–तरीके भी बदल गये है। सृजन की इसी भावना से प्रेरित कतिपय कलाकार संस्थापन (इंस्टालेशन) जैसे नवीन कला माध्यम में नवाचार की नयी भाषा व अर्थ प्रदान कर रहे है। कला सृजन के इस दौर में नवाचार को नयी भाषा व अर्थ प्रदान कर रहे है।

वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रायः यह भी देखा व समझा जा सकता है कि कलाकार नवीनता के मार्ग पर इस हद तक गुजर गया कि उसने रचना संसार में अपनी स्मृति से सामाजिक फिनामिना के रंग–ढंग, बिम्ब विषय वस्तु और अतीत व निर्यतित के उन अस्पष्ट रूपो, काव्यांगो व राग–रागनियों को रचनात्मकता के साथ रचा है जो वस्तुतः बदलती कला धाराओं को अभिव्यक्त करती है इस प्रकार बदलती वैचारिक प्रवृत्तियों के मुताबिक कला में रसात्मक अनुभूति की अभिव्यक्ति हो रही है।

आज कला में आदिम कला से आधुनिक काल तक की मिथक चेतन के साथ–साथ नव प्रवृत्तियाँ उभर रही है। यही प्रवृत्ति कला की सभी विद्यावों मे देखी व समझी जा सकती है। वैश्वीकरण के दायरें में कलाकारों के आचार–विचार का आदान–प्रदान हुआ, वही वैज्ञानिक साधनों के बहुमुखी विकास में कलाओं को कई तरह से प्रभावित किया। माध्यम व तकनीक के साथ कला का स्वरूप बदला वही संयोजन के तौर तरीके बदले। इन्हे आगे बढ़ने के अवसर भी मिल रहे है। आज हर चीज बड़ी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। सबकुछ बना–बनाया (रेड़िमेड) मिलता है। एक बटन दबाओ और घर पर ही सारी सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जायेगी।

आज स्पर्धा का युग है, इसमें वैचारिक आर्थिक, वैज्ञानिक मानदण्ड या धरातल खोजने की ललकार है, प्रत्येक व्यक्ति किसी भी कार्य को करते समय, सभी के अनुकूल, अर्थ लाभ और वैज्ञानिक आधार पर उचित ठहरना चाहता हैं इसलिए यह सोचना आवश्यक हो जाता है, कि क्या कलाओं को भी इन्ही के आधार पर, इन्ही के भरोसे छोड़ दिया जाना उचित है या नहीं।

वर्तमान भारत का सृजन–परिदृश्य तथा कला बाजार विशेषकर बडे नगरों में केन्द्रित हो गया लगता है क्योंकि अधिकांश सफल कलाकार तथा युवा कलाकार भी आज बाजार का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किये हुए है कलाकृतियों के "अधिग्रहण" को लेकर बढ़ी हुई दिलचस्पी में, सिर्फ कला के प्रति जागरूकता का योगदान ही नहीं है बल्की भारत की समकालीन कला का बाजार आर्थिक परिवर्तनों, खुली आर्थिक नीति तथा निजी क्षेत्रो के विकास के कारण भी पनप सका है।

आज कलाएं उपभोग की वस्तु बनती जा रही है, इन्हें अर्थ के साथ तौला जा रहा है ऐसा करने से अर्थ (धन) का महत्व बढ़ रहा है, तथा कला के शुद्ध और सृजनात्मक चरित्र को हानि पहुँच रही है। कलाकार अपना कार्य केवल बाजार को ध्यान में रखकर करने लगा है बाजार किसी कृति में, मात्र आकर्षण की खोज करता है वह सृजनात्मक विशेषताओं और सूक्ष्म तत्वों का ज्ञान नही रखता। इससे युवा रचनाकार, भ्रमित हो रहे है। कला का विकास बाधित हो रहा है भीतर से मिलने वाली नवीन प्रेरणाएं दमित हो रही है नवसृजन के स्थान पर कला प्रसार– प्रचार और विज्ञापन का रूप ले रही है।

कला कर्म प्रयोजन परक होता जा रहा है। आज का युवा कलाकार अपनी निजी अभिव्यक्ति में ऐसे रूपाकारों को अपना रहे है, जो बहुअर्थी हो। इसका एक प्रमुख उद्देश्य तो समझ में आता है कि कला के बाजार में आई तेजी से फायदा उठाया जाए जो व्यावसायिक कलादीर्घाओं की बड़ी हुई संख्या तथा विदेशी खरीदारों के कारण संभव हुई है और आकर्षक बिक्री के अवसर ज्यादा बढ़े है संभवतः सांस्कृतिक आयात भी बहुत ज्यादा है जिसकी वजह से आजकल के कलाकारों में अपने ही बल पर समय की चुनौती को स्वीकार करने में संकोच होता है पर सबसे हैरानी की बात यह है कि शायद ही कोई ऐसा कलाकार होगा, जो अपनी कला को परम्परा से प्राप्त दाम के साथ जोड़ना चाहता हो। ये कलाकार ऐसी हर चीज से अभिभूत है जो "पश्चिमी" कहलाती है ऐसा लगता है कि उनके लिए अपनी परम्परा का कभी अस्तित्व ही न रहा हो या फिर ये इसे इतना महत्वपूर्ण नहीं मानते कि इसकी सार्थकता उन्हे नजर आए। वर्तमान समय में सृजन–परिदृश्य तथा कला बाजार विशेषकर बड़े नगरों में केन्द्रित हो गया लगता है क्योंकि अधिकांश सफल कलाकार तथा युवा कलाकार भी आज बाजार का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किये हुए है कलाकृतियाँ के 'अधिग्रहण' को लेकर बढ़ी हुई दिलचस्पी सिर्फ कला के प्रति जागरूकता का योगदान ही नहीं है। भारत की समकालीन कला का बाजार आर्थिक परिवर्तनों, खुली आर्थिक नीति तथा निजी क्षेत्र के विकास के कारण पनप सका।

गैलरियों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई है और कलाकृतियाँ अविश्वसनीय रूप से ऊंचे दामो पर बिक रही है। कलाकृतियों की खरीद के पीछे अटकलबाजी ज्यादा है क्योंकि अभी तक किसी कृति की गुणवत्ता और उसके सही मुल्य को जांचने के लिए कोई स्पष्ट आधार या मानक नहीं बना है। हालाकि इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि कला एक लाभकारी निवेश साबित होगा तब भी धनी लोग उत्साहपूर्वक पेन्टिग्स तथा मूर्तिशिल्प खरीद रहे है उचित कीमत पर बिकने के कारण ग्राफिक प्रिन्ट भी बहुत लोकप्रिय है।

कला में उपभोक्तावादी संस्कृति का वर्चस्व बढ़ रहा है वहीं हमें अपनी मौलिकता के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता भी है। यह एक चुनौति ही नहीं, वरन समकालीन कला सृजन की महत्ति आवश्यकता भी है। आज का कलाकार बाजारवाद की ओर उन्मुख होने लगा है। क्योंकि कला बाजार के अनुरूप ही कलाकर्म और कला की विभिन्न प्रवृत्तियाँ अपनी दिशा में निर्धारित कर रही है, जो केवल रचनाकारों और समीक्षकों की संवेदनहीनता का ही परिणाम है। वैश्वीकरण से जहाँ समाज भौतिकवाद की ओर प्रवृत्त हुआ है, वहीं समाजिक मुल्य भी तिव्रता से परिवर्तित हो रहे है। अगुवा माने जाने वाले रचनाकार, चिंतक, लेखक, नाटककार, मौलिक रचना के माध्यम से एक सुखद और सुवासित वातावरण सृजित कर सकते है, पर ऐसे परिवेश के परिपेक्ष्य में स्वास्थ्य व संतुलित समीक्षकों की भूमिका अहम मानी जाती है, जो एक चुनौतिपूर्ण परिणाम को अभिवक्त करती है। इसके लिए स्वयं रचनाकारों तथा कला–प्रेमियों को परिवर्तित होते सामाजिक, सांस्कृतिक व सौन्दर्य शास्त्रीय मुल्य, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा नवीन अन्वेषणों से साक्षात्कार करते रहना होगा। समाज में वैश्वीकरण एक जटील ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। सामाजिक धारणाओं के मद्देनजर पूंजीवादी विस्तार के पीछे दलालो से खतरा बना हुआ है। समाज के भूमण्डलीकरण में एक विशिष्ठ प्रकार की राजनीति और संस्कृति फलने–फूलने की मांग करती देखी जाती है। इनके लिए कला में नित–नवीन प्रतिमानों की आवश्यकता को ठुकराया नहीं जा सकता। यद्यपि कला पूंजीवाद लोगो का अधिकार बनती जा रही है तथापि कलाकार कला के नवीन प्रतिमान के साथ आज भी कई चुनौतियों का सामना कर रहे है।

वर्तमान से समस्त कलाओं एवं कलाकारों के जहन में कई प्रकार की समस्याएं एवं चुनौतियां घर कर गई है। घर में बैठकर कर साधना करने का जमाना नहीं रहा आज आपको घर बैठकर साधना करने से कोई साधु या पण्डित नहीं कहेगा। आज प्रतिभाशाली कलाकारो को कला में राजनीति करने वाले कलाकार एवं उनकी चापलुसी करने वाले कलाकार मिलकर पछाड़ देते है सभी कला विद्याओं को आज राजनीति ने बहुत अच्छी तरह से जकडे हुआ है। कुछ ऐसे ही अनेक कारण है जिनके कारण समस्त ललित कलाओं में ढेर सारी चुनौतियां वर्तमान में हमारे समक्ष सीना ताने खडी हुई है।

कलाकारों की आपसी खिचतान, व्यावसायिक जलन, समुहवाद, जातिवाद एवं उनमें निहित राजनीति ने भी प्रदेश के कलाकारो की स्थिति में कई चुनौतियों को जन्म दिया है। कला और कलाकारों के स्तर में गिरावट आई है। आज कुछ कलाकार पैसा तो कमा रहे है किन्तु यह सम्मान नहीं कमा पा रहे है जिसके वे हकदार थे। आज भी हम जब भी कलाकारों की बात करते है तो तानसेन, पीकासों, लियान्डों इत्यादि कलाकारों का ही उदाहरण देते है, नए कलाकारो का नाम नहीं ले पाते। क्योंकि वर्तमान में बरसाती मेंढ़को के समान इंजेक्शन दे–देकर बनाए जा रहे कलाकारों की कौन बात करेगा। आज श्रेष्ठ कलाकारों का न होना भी बड़ी चुनौती है।

वर्तमान परिवेश में कलाकारों के मानस पटल पर अनुकूल और प्रतिकुल प्रभाव अवश्य ही पड़ रहा है इस प्रभाव के कारण वह उलझा हुआ सा रहता है। इसे एक मूख्य चुनौती के रूप में स्वीकार करना होगा और वर्तमान परिवेश में समय की आवश्यकतानुसार कलाओं के साथ–साथ ही स्वयं को भी तैयार करना होगा।

आज वैश्वीकरण एक युग में रातो–रात कलाकार बनने की प्रवृत्ति प्रबल हो रही है। हर छोटा कलाकार अपने आपको बड़ा कलाकार मानता है, ऐसा नहीं होना चाहिए। कलाकार को अपने प्रति ईमानदार होना चाहिए।

अतः यह सत्य है कि कोई भी कला, परम्परावादी आज के संदर्भ में उपयोगी नहीं है तो वह अर्थहीन है और उसका चलन रहने वाला नहीं है। इन सारी विधाओं के पीछे भी यही दर्शन है। यदि हमें इन कलाओं के विविध रूपों को जीवनोपयोगी और अर्थवान रखना है तो उन्हे वैसी की वैसी स्थिति में स्वीकार करने का मोह

छोड़ना होगा और वैश्वीकरण से जो कुछ बदलाव आया है उससे चिंतित हुए बिना उसे खुशी–खुशी स्वीकार करना होगा। कलाओं को बनाये रखने के लिए आवश्यक भी है कि वे कुछ न कुछ नया ग्रहण करती रहें, उसे आत्मसात करती रहें। वे पारम्परिक भी लगें और नया जो कुछ है उससे भी विलग न रहे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश (भाग–1) पृष्ठ सं.– 172
2. रामप्रसाद शास्त्री त्रिपाठी, सम्मेलन पत्रिका पृष्ठ सं.– 69
3. डॉ गिर्राज किशोर अग्रवाल, कला निबन्ध, ललित कला प्रकाशन अलीगढ प्रथम संस्करण 1971 पृष्ठ सं.–13
4. रामचन्द्र शुक्ल, कला और आद्युनिक प्रवत्तिया, 1958 उत्तर प्रदेश पृष्ठ सं.– 142
5. रा .वि साखॅलकर ,कला के अन्त दर्शन, राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
6. राष्ट्रीय सहारा, 1अप्रेल 1993 पृष्ठ सं. –(14–15)

❖◆❖